सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

दादी माँ की जादुई कहानी

बहुत समय पहले एक छोटे से गाँव में रोहन नाम का एक प्यारा सा लड़का रहता था. वह बहुत जिज्ञासु था और हर चीज़ के बारे में जानना चाहता था. रोहन की सबसे अच्छी दोस्त उसकी दादी माँ थीं. हर रात खाने के बाद रोहन दादी के पास जाकर कहता, 'दादी, आज कौन-सी कहानी सुनाओगी?' दादी मुस्कुरातीं और अपने पास बिठाकर एक नई कहानी शुरू कर देतीं.

एक रात दादी ने कहा, 'आज मैं तुम्हें एक जादुई पेड़ की कहानी सुनाऊँगी.' रोहन की आँखें चमक उठीं. दादी ने कहानी शुरू की—बहुत समय पहले एक गाँव में अर्जुन नाम का एक लड़का रहता था. वह बहुत समझदार था लेकिन कभी-कभी थोड़ा आलसी भी हो जाता था. एक दिन वह जंगल में घूमने गया. जंगल बहुत सुंदर था—ऊँचे-ऊँचे पेड़, चहकते पक्षी और ठंडी हवा. घूमते-घूमते अर्जुन को एक अजीब सा पेड़ दिखाई दिया. उस पेड़ के पत्ते चमक रहे थे, जैसे उन पर छोटे-छोटे सितारे लगे हों. अर्जुन ने सोचा, 'यह तो बहुत ही अनोखा पेड़ है!' तभी पेड़ से हल्की आवाज़ आई, 'अगर तुम मेहनत करोगे और दूसरों की मदद करोगे, तो मैं तुम्हारी एक इच्छा पूरी करूँगा.'

अर्जुन पहले तो डर गया, फिर उसने सोचा कि शायद यह सच में जादुई पेड़ है. उसने पेड़ से पूछा, 'क्या सच में आप मेरी इच्छा पूरी करेंगे?' पेड़ ने कहा, 'हाँ, लेकिन पहले तुम्हें अच्छा काम करना होगा.' अर्जुन घर लौट आया. अगले दिन उसने देखा कि उसकी पड़ोस की दादी पानी की भारी बाल्टी उठाने की कोशिश कर रही थीं. पहले तो वह खेलने जाने वाला था, लेकिन उसे जादुई पेड़ की

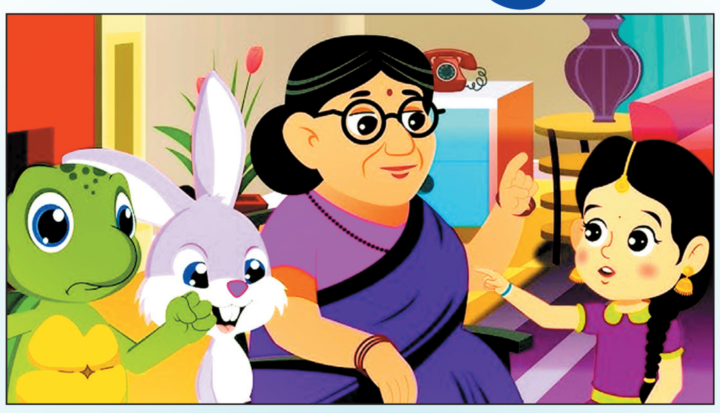

बात याद आई. वह तुरंत गया और बोला, 'दादी, मैं मदद कर देता हूँ.' उसने बाल्टी उठाकर उनके घर तक पहुँचा दी. दादी बहुत खुश हुईं और उसे आशीर्वाद दिया.

उस दिन अर्जुन को बहुत अच्छा लगा. उसने सोचा कि दूसरों की मदद करना कितना अच्छा होता है. अगले दिन उसने अपने दोस्त की पढ़ाई में मदद की. फिर उसने गाँव के मंदिर के पास सफाई भी की. धीरे-धीरे वह रोज़ कोई न कोई अच्छा काम करने लगा .कुछ दिनों बाद अर्जुन फिर जंगल में गया और उसी पेड़ के पास पहुँचा. पेड़ ने मुस्कुराकर कहा, 'अर्जुन, तुमने बहुत अच्छे काम किए हैं. अब बताओ तुम्हारी इच्छा क्या है?' अर्जुन ने थोड़ी देर सोचा. पहले वह खिलौने माँगना चाहता था, फिर उसने सोचा कि अगर गाँव में सब खुश होंगे तो उसे भी खुशी होगी. उसने कहा, 'मेरी इच्छा है कि हमारे गाँव में कभी पानी की कमी न हो.' पेड़ थोड़ी देर चमका और बोला, 'तुमने अपने लिए नहीं, सबके लिए इच्छा माँगी है. इसलिए तुम्हारी इच्छा जरूर पूरी होगी.' अगले ही दिन गाँव के पास एक साफ़ और मीठे पानी का नया कुआँ निकल आया. पूरे गाँव में खुशी फैल गई. गाँव वाले सोचने लगे कि यह चमत्कार कैसे हुआ, लेकिन अर्जुन चुप रहा. वह बस खुश था कि अब किसी को पानी के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा. लोग अर्जुन की तारीफ़ करने लगे क्योंकि वह हमेशा दूसरों की मदद करता था. दादी यहाँ तक कहानी सुनाकर थोड़ी देर रुकीं. रोहन ध्यान से सुन रहा था. उसने पूछा, 'दादी, फिर उस पेड़ का क्या हुआ?'

दादी मुस्कुराईं और बोलीं, 'जादुई पेड़ हमेशा वहीं रहता है, लेकिन वह सिर्फ उन्हीं लोगों से बात करता है जिनका दिल अच्छा होता है.'

रोहन ने धीरे से कहा, 'तो क्या मैं भी कभी उस पेड़ से मिल सकता हूँ?' दादी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, 'अगर तुम हमेशा सच बोलोगे, मेहनत करोगे और लोगों की मदद करोगे, तो तुम्हें हर जगह जादू दिखाई देगा.'

उस रात रोहन ने सोचा कि वह भी अर्जुन की तरह अच्छे काम करेगा. अगले दिन उसने अपनी माँ की मदद की, स्कूल में अपने दोस्त की कॉपी ढूँढने में मदद की और रास्ते में एक छोटे बच्चे को गिरने से बचाया. उसे लगा कि सच में दूसरों की मदद करने से दिल में एक अलग ही खुशी मिलती है. धीरे-धीरे रोहन पूरे गाँव में अपने अच्छे व्यवहार के लिए जाना जाने लगा. लोग कहते थे कि यह लड़का बहुत दयालु है. रोहन को जब भी किसी की मदद करने का मौका मिलता, वह खुशी-खुशी मदद करता.

रात को जब वह दादी के पास बैठता, तो दादी मुस्कुराकर पूछतीं, 'आज कौन-सा अच्छा काम किया?' रोहन गर्व से अपनी छोटी-छोटी बातें बताता और दादी खुश होकर उसे आशीर्वाद देतीं. समय के साथ रोहन बड़ा होता गया, लेकिन उसने दादी की कहानी और उस जादुई पेड़ की सीख कभी नहीं भूली. उसे समझ आ गया था कि असली जादू पेड़ों में नहीं, बल्कि अच्छे कामों में होता है.

सीख

हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए, सच्चाई और मेहनत से काम करना चाहिए. जब हम दूसरों के लिए अच्छा सोचते हैं, तो दुनिया अपने आप बेहतर बन जाती है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

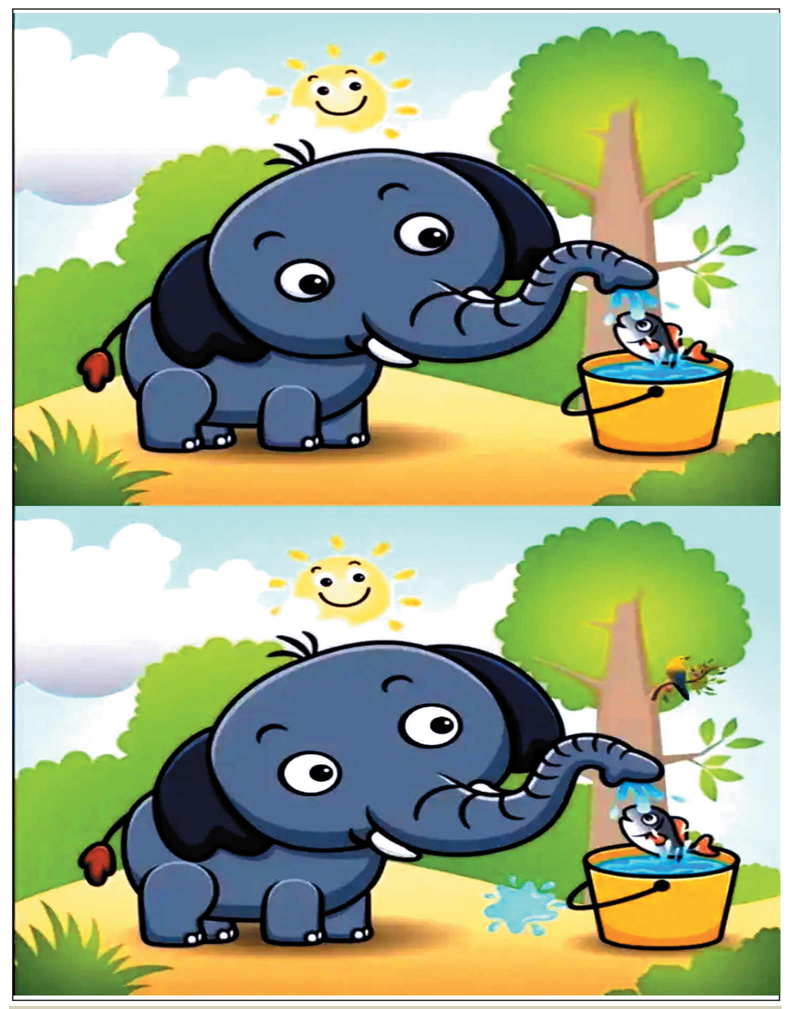

उत्तर:- 1. हाथी के आंखों में अंतर, 2. पेड़ पर बैठी चिड़िया, 3. जमीन पर गिरा पानी

कविता

पेड़-पौधों का प्यार

हर पेड़ है धरती का सहारा,
हर पत्ता देता जीवन हमारा.
फूलों से आती है खुशबू प्यारी,
पंछी गाते हैं गीतों की डोरी.

सूरज की किरणें जगाती रोशनी,
बरसात में भीगती धरती की गोदी.
हम सब मिलकर करें इसे बचाना,
प्रकृति को प्यार से सजाना-संवारना.

भूल भुलैया

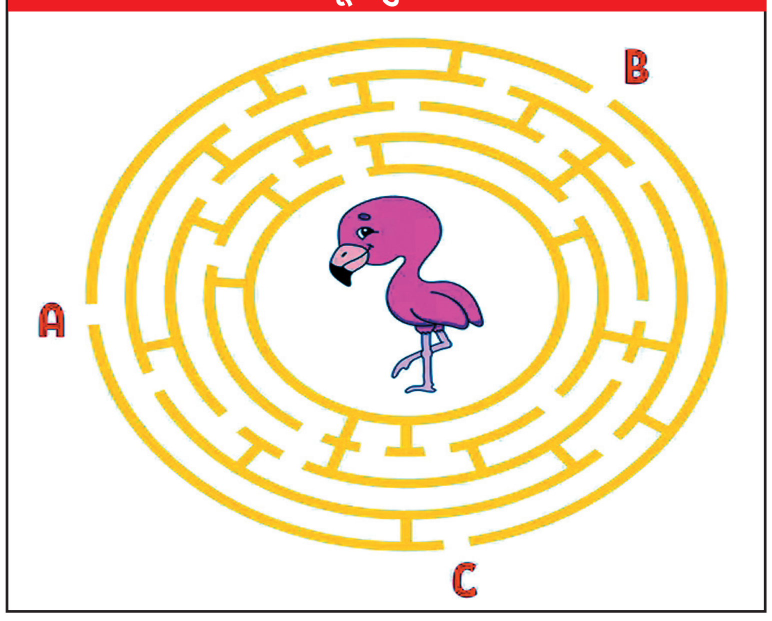

प्रेरक प्रसंग

वंदे मातरम् के रचयिता बंकिम चंद्र

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय भारतीय साहित्य और देशभक्ति के इतिहास में एक ऐसा नाम है जिसने शब्दों से लोगों के दिलों में आज़ादी की आग जलाई. वे केवल एक लेखक ही नहीं थे, बल्कि एक ऐसे विचारक और प्रेरणादायक व्यक्तित्व थे जिनकी रचनाओं ने भारत के लोगों को अपने देश से प्रेम करना सिखाया.

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का जन्म 27 जून 1838 को बंगाल में हुआ था. बचपन से ही वे बहुत बुद्धिमान और पढ़ाई में तेज थे. उस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था और भारतीय समाज कई तरह की कठिनाइयों से गुजर रहा था. बंकिम चंद्र ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद सरकारी नौकरी भी की, लेकिन उनके मन में हमेशा साहित्य के माध्यम से समाज को जागरूक करने की इच्छा थी.

उन्होंने सबसे पहले अंग्रेज़ी में लिखने की कोशिश की, लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि यदि वे अपने लोगों तक पहुँचना चाहते हैं तो उन्हें अपनी मातृभाषा में लिखना चाहिए. इसलिए उन्होंने बंगाली भाषा में उपन्यास और लेख लिखना शुरू किया. उस समय बंगाली साहित्य में उपन्यास लिखने की परंपरा बहुत कम थी, लेकिन बंकिम चंद्र ने इस क्षेत्र में नई राह बनाई. इसी कारण उन्हें आधुनिक बंगाली उपन्यास का अग्रदूत भी कहा जाता है. उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति आनन्दमठ है. इस उपन्यास में उन्होंने देशभक्ति, त्याग और स्वतंत्रता के भाव को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया. इसी उपन्यास में एक गीत था जिसने पूरे भारत में नई ऊर्जा भर दी— वंदे मातरम् . यह गीत भारत माता की स्तुति करता है और लोगों को अपने देश के लिए प्रेम और समर्पण की भावना से भर देता है. बाद में यही गीत भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण नारा बन गया.

जब भारत में स्वतंत्रता की लड़ाई चल रही थी, तब हजारों स्वतंत्रता सेनानी 'वंदे मातरम्' का नारा लगाकर आगे बढ़ते थे. यह गीत लोगों के दिलों में साहस और आत्मविश्वास जगाता था. इस तरह बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने शब्दों से लोगों को प्रेरित किया और देशभक्ति की भावना को

मजबूत किया.बंकिम चंद्र केवल देशभक्ति के लेखक नहीं थे, बल्कि उन्होंने समाज की समस्याओं, नैतिक मूल्यों और मानवीय भावनाओं को भी अपनी कहानियों में बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया.

उनकी लेखनी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे सरल भाषा में गहरी बात कह देते थे. उनकी कहानियाँ पढ़कर लोगों को न केवल आनंद मिलता था, बल्कि जीवन के बारे में नई सोच भी मिलती थी. उन्होंने यह दिखाया कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज को बदलने की ताकत भी रखता है.

रंग भरो

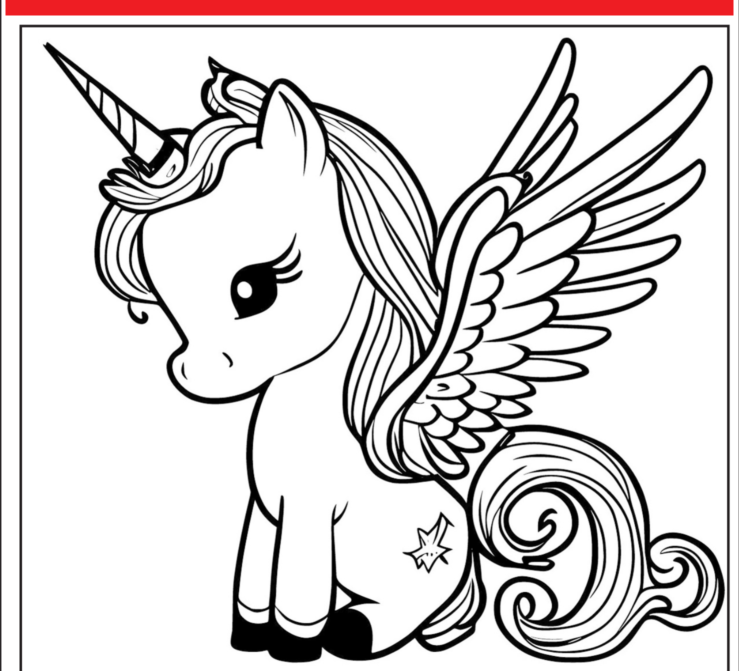

बिंदु मिलाओ

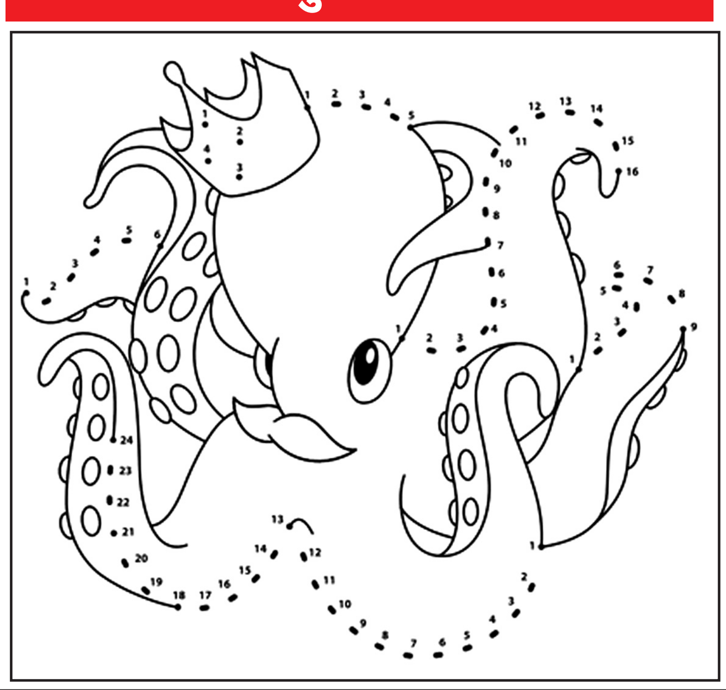

जानकारी

प्रकृति में नाइट्रोजन का महत्व

नाइट्रोजन गैस एक बहुत महत्वपूर्ण गैस है जो हमारे चारों ओर हवा में मौजूद होती है. हम जिस हवा में सांस लेते हैं, उसमें कई तरह की गैसें होती हैं, और उनमें सबसे ज्यादा मात्रा नाइट्रोजन की होती है. लगभग 78 प्रतिशत हवा नाइट्रोजन गैस से बनी होती है. यह गैस रंगहीन, गंधहीन और स्वादहीन होती है, इसलिए हमें इसे सीधे महसूस करना मुश्किल होता है.

नाइट्रोजन का रासायनिक चिन्ह एन 2 होता है. इसका अर्थ है कि नाइट्रोजन के दो परमाणु मिलकर एक अणु बनाते हैं. यह गैस सामान्य परिस्थितियों में बहुत शांत और स्थिर रहती है, यानी यह आसानी से किसी दूसरी वस्तु के साथ क्रिया नहीं करती. इसी कारण इसे सुरक्षित गैसों में गिना जाता है

नाइट्रोजन प्रकृति में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. पौधों की वृद्धि के लिए नाइट्रोजन बहुत जरूरी होती है. पौधे सीधे हवा से नाइट्रोजन नहीं ले पाते, इसलिए मिट्टी में रहने वाले कुछ विशेष सूक्ष्म जीव नाइट्रोजन को ऐसे रूप में बदल देते हैं जिसे पौधे उपयोग कर सकें. इस प्रक्रिया को नाइट्रोजन चक्र कहा जाता है. इस चक्र के कारण नाइट्रोजन लगातार प्रकृति में घूमती रहती है और पौधों, जानवरों तथा मनुष्यों के जीवन को सहारा देती है. नाइट्रोजन गैस का उपयोग कई जगहों पर किया जाता है. खेती में इसका बहुत बड़ा महत्व है. किसान खेतों में उर्वरक डालते हैं जिनमें नाइट्रोजन होती है. इससे पौधे जल्दी और अच्छे से बढ़ते हैं और फसल अधिक होती है. इसी कारण नाइट्रोजन को पौधों के लिए बहुत आवश्यक पोषक तत्व माना जाता है. इसके अलावा नाइट्रोजन का उपयोग कई उद्योगों में भी किया जाता है. कई खाद्य पदार्थों को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए पैकेटों में नाइट्रोजन गैस भरी जाती है. आपने देखा होगा कि आलू के चिप्स के पैकेट थोड़े फूले हुए होते हैं. उनमें नाइट्रोजन गैस भरी जाती है ताकि चिप्स टूटें नहीं और लंबे समय तक ताजे रहें.

नाइट्रोजन का एक विशेष रूप भी होता है जिसे द्रव नाइट्रोजन कहा जाता है. यह बहुत ठंडी होती है और इसका तापमान लगभग शून्य से 196 डिग्री नीचे होता है. इसका उपयोग विज्ञान प्रयोगशालाओं, चिकित्सा कार्यों और कई वैज्ञानिक प्रयोगों में किया जाता है.

ऊर्जा का साथी एलपीजी

- एलपीजी का पूरा नाम लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस होता है.
- यह मुख्य रूप से प्रोपेन और ब्यूटेन गैसों से मिलकर बनती है.
- एलपीजी को सिलेंडर में दबाव डालकर तरल रूप में भरा जाता है.
- असली एलपीजी में कोई गंध नहीं होती, सुरक्षा के लिए इसमें गंध वाला पदार्थ मिलाया जाता है.
- एलपीजी एक साफ और कम प्रदूषण फैलाने वाला ईंधन है.
- भारत में एलपीजी सिलेंडर आमतौर पर लाल रंग के होते हैं.
- एलपीजी का उपयोग खाना बनाने, गाड़ियों और उद्योगों में भी किया जाता है.
- एलपीजी लकड़ी और कोयले से ज्यादा साफ और सुविधाजनक ईंधन है.

बूझो तो जानें

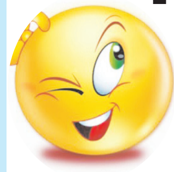

- मैं उड़ती हूँ, पंख नहीं, सबको ठंडक देती हूँ.
  उत्तर- हवा
- रात में चमकती हूँ, दिन में छुप जाती हूँ.
  उत्तर- चाँद / सितारे
- चार पैर, पूँछ, भौंकता हूँ.
  उत्तर- कुत्ता
- सर्दियों में गिरती हूँ, सबको ठंडक देती हूँ.
  - बर्फ
- मीठा, पीला या लाल, बच्चों को भाता हूँ.
  उत्तर- फल / आम या सेब
- पानी में रहती हूँ, मछली नहीं.
  उत्तर- नाव / कश्ती
- दिन में सोती, रात में चमकती हूँ.
  उत्तर- सितारे
- चुपचाप गिरती हूँ, प्यास बुझाती हूँ.
  उत्तर- बारिश
- सबको पास बुलाती हूँ, पर बिना आवाज़ के.
  उत्तर- सूरज की किरणें
- न दांत है, न मुँह है, फिर भी सब खाती हूँ.
  उत्तर- आग
- कौन-सी चीज़ पानी में गिरती है तो भीगी नहीं होती?
  उत्तर- परछाई

हंसी-ठिठोली

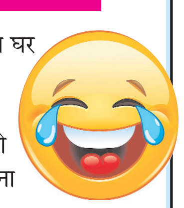

- पप्पू: 'मम्मी, मछली का घर कहाँ है?'
  मम्मी: 'पानी में.'
  पप्पू: 'तो फिर मछली को मकान टैक्स क्यों नही देना पड़ता?'
- टीचर: 'अगर तुम्हारे पास 10 चॉकलेट हैं और तुम्हारा दोस्त 2 ले ले, तो क्या होगा?'
  बच्चा: 'सर, मेरी दोस्ती खतरे में पड़ेगी!'
- पप्पू अपने दोस्त से: 'मेरे जूते तो गायब हो गए.'
  'दोस्त: 'कहाँ गए?'
  पप्पू: 'मेरी मम्मी ने पहन लिया, बोली अच्छा लग रहा है!'
- बबलू: 'पापा, मुझे स्कूल नहीं जाना.'
  पापा: 'क्यों बेटा?'
  बबलू: 'क्योंकि मैं होमवर्क से डरता हूँ.'
  पापा: 'तो डर क्यों नहीं लगता टीवी से?'
  बबलू: 'टीवी डराती नहीं, हँसाती है!'
- पप्पू: 'डॉक्टर साहब, मुझे नींद नहीं आती.'
  डॉक्टर: 'सोने की दवा लो.'
  पप्पू: 'मैंने खा ली, लेकिन सपना देखने की आदत नहीं छोड़ता.'
- मम्मी: 'तुम्हारे पेंसिल में इरेज़र क्यों नहीं है?'
  पप्पू: 'मम्मी, गलतियाँ तो मैं बार-बार करता हूँ, इरेज़र जल्दी खत्म हो जाएगा!'

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**